फीजी में अकादमिक विचारों के साथ व्यक्तिगत अनुभव

एम. नधीरा शिवंति
हिन्दी अध्यापिका,
स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो, श्री लंका
इमेल: nadheerashewanthi@gmail.com
मोबाईल:+94777249145

भारत सरकार के संयोग से 12वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन 15 फरवरी से 17 फरवरी, 2023 तक फीजी के नादी शहर में आयोजित किया गया । इस सम्मेलन में भाग लेने का सुख समाचार स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक प्रो. (डॉ.) अंकुरण दत्ता जी द्वारा मिला। यह समाचार सुनकर एक बार तो मुझे ऐसा लगा कि इतनी दूर कैसे जाऊँ? लेकिन सभी शुभचिंतकों ने हौसला दिया कि यह बहुत अच्छा अवसर मिला है । इससे दुनिया भर के हिन्दी प्रेमियों से मिलने का अवसर मिलेगा और एक नया अनुभव भी प्राप्त होगा। क्योंकि पहली बार केंद्र की प्रतिनिधि बनकर फीजी जाना था । इससे पहले कभी केंद्र से इस तरह का आयोजन नहीं हुआ। थोड़े समय में सभी तैयारियाँ करनी थी । एक हफ़्ते के अंदर सब कुछ करना था । जैसे पासपोर्ट बदलना, बैंक की जानकारी लेना, वीज़ा का अप्लीकेशन भरना आदि । मैं एक ओर से सभी में भाग-दौड़ करने लगी। क्योंकि तमाम कामों के बीच फीजी की तैयारियाँ बहुत महत्वपूर्ण रही। हमें वहाँ जाने से पहले भारतीय उच्चायोग के उच्चायुक्त महामहिम श्री गोपाल बागले जी से मिलने का सुअवसर मिला और उन्होंने हमें इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए शुभ कामनाएँ दी और कहा कि इस अवसर पर आपको नए-नए अनुभव प्राप्त होंगे। उन्होंने हमें प्रेरणा दी जिससे हमारे दिल में इस सम्मेलन में भाग लेने की और जिज्ञासा बढ़ गयी।

फ़िर हम प्रो. अंकुरण जी से सांस्कृतिक केंद्र में मिलकर उनके अभिप्रेरणा, मार्गदर्शन और आदर्श से मन में ठान लिया कि हिन्दी भाषा की स्थिति श्रीलंका में सुदृढ़ रूप से दुनिया में बढ़ाना चाहिए । श्रीलंका और हिन्दी भाषा की शान को लेकर हमने फीजी के लिए प्रस्थान किया । हम पाँच, प्रतिनिधियों के रूप में कोलंबो से निकले । सफ़र के शुरू से अंत तक एक दूसरे का बहुत ध्यान रखा । फीजी के लिए हमें तीन विमानों से जाना पड़ा । फीजी के हवाई अड्डे पर उतरने के बाद नया अनुभव हुआ । वातावरण देखने से बिल्कुल श्रीलंका जैसा लगा । बारिश हो रही थी । देखने में लोगों की शक्ल नीग्रो लोगों की तरह लगी । हवाई अड्डे के अंदर एक तरफ़ से खड़े होकर संगीत वृंद वहाँ के लोक संगीत सुनाने लगे। फ़िर मैंने सोचा कि अभी से नए अनुभवों को इकट्ठे करते हुए जाना है । और उन सभी क्षणों को मोबाईल में कैद करने लगे।

फीजी हवाई अड्डे पर हमारा स्वागत उनकी पारंपरिक संस्कृति के अनुसार किया गया । फ़िर रात ही हम होटल शेरोटन के रात्री भोजन के लिए निकले। वहाँ भारतीयों के साथ भिन्न-भिन्न देशों से आये हुए हिन्दी प्रेमियों को देखकर बहुत अच्छा लगा। उनमें से प्रो. राम मोहन पाठक सर से मिलकर मन बहुत प्रसन्न हुआ । क्योंकि उन्हें 2018 बनारस में मिलने के बाद फ़िर मुलाकात इतनी दूर और वह भी विश्व हिन्दी सम्मेलन में हुई ।

वहाँ पहुँचने के बाद मैंने अपने आप को खुशनसीब समझा । क्योंकि श्रीलंका की प्रतिनिधि बनकर वहाँ जाने का सुअवसर महामहिम श्री गोपाल बागले जी और प्रो. अंकुरण दत्ता जी के प्रयास से मिला । मैं उन दोनों की आभारी हूँ। साथ ही मन में यह

विचार आया कि "मेहनत का फल मीठा होता है"। वह फीजी में सच निकला । वहाँ का माहौल देखकर ऐसा लगा कि प्रेमचंद जी की 'परीक्षा' उपन्यास में भी इस तरह से उल्लेख किया है कि उम्मीदवारों को देखने से मेला–सा लग रहा है । उसी तरह नादी में भी रंग–बिरंगे कपड़ों से सजधज कर हिन्दी प्रेमी इधर–उधर टहल रहे थे ।

प्रथम दिन उद्घाटन समारोह हुआ था । वह भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर प्रसाद जी और फीजी के राष्ट्रपति श्री वी. मुरलीधरन के करकमलों द्वारा किया गया । वहाँ की संस्कृति को प्रदर्शन करते हुए स्वागत संदेश, नृत्य, संगीत आदि प्रस्तुत किए गए । अनुभव के साथ हम एक के बाद एक देख रहे थे कि क्या हो रहा है? सुबह नाश्ते से लेकर रात्री भोजन तक खाने–पीने की सुविधाएँ उत्कृष्ट था । विदेश मंत्रालय के अधिकारियों और कुछ बनारस के प्रोफेसर गण से मिलकर ताज़ुब के साथ खुशियों का ठिकाना न रहा ।

उन्हीं हस्तियों के बीच में मुझे विगत वर्ष में श्रीलंका के भारत के उच्चायोग के उप उच्चायुक्त श्री अरिंदम बागची जी से मिलकर बहुत ही अच्छा लगा। उन्होंने कहा, "नधीरा, दुनिया बहुत छोटी है"।

12वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी के विकास की अनेक संभावनाओं को लेकर उपस्थित हुआ है । इस सम्मेलन जैसे आयोजनों से हमें एक–दूसरे के साहित्यिक योगदान के बारे में जानने का अवसर मिलता है । हिन्दी को वैश्विक भाषा बनाने की दिशा में सतत प्रयास किये जाएँगे । इस सम्मेलन में कई विषयों पर आयोजित सत्र बार–बार सुनने का मौका मिला । कुछ सत्र छूट गये थे । सम्मेलन में यह एक कमी महसूस हुई कि समानांतर सत्रों में भाग लेते हुए केवल एक ही सत्र के वक्ता को सुनने का मौका मिला और खासकर विदेश से आये अहिंदी भाषी प्रोफ़ेसर गण और हिन्दी अध्यापक गण को इस सम्मेलन में बोलने का अवसर देना था । तीन दिनों के अनुभवों के साथ सम्मेलन अच्छा चल रहा था । विदेश मंत्री से समूह तस्वीर लेते समय साक्षात्कार हुआ। फीजी के अनुभवों के साथ हम वापस श्री लंका के लिए लौटने को तैयार हुए। कोलंबो में आने के बीच हमें सिंगपोर हवाई अड्डे पर एक दिन रुकना पड़ा । इसलिए हम वहाँ का नज़ारा भी देख सकें। दोनों देशों के स्मरण के यादाश्त दिल और दिमाग में रखकर कोलंबो में उन्नीस तारिख को कदम रखा । आते समय सोचा कि निदेशक सर से कहकर कोलंबो में भी इस तरह के हिन्दी सम्मेलन का आयोजन करना है । ताकि हम भी बड़े न सही छोटे सम्मेलन से यह आदर्श दुनिया में पहुँचा सकते हैं कि श्री लंका में भी हिन्दी भाषा के प्रसार–प्रचार को लेकर बहुत काम हो रहे हैं ।

अंत में मैं इतना कहना चाहूँगी कि फीजी में आयोजित 12वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन एक सफ़ल और हिन्दी के विस्तार के लिए एक प्रगतिशील सत्र रहा। और ऐसा अनुभव रहा हिन्दी का दायरा दिन प्रति दिन विश्व में चारों तरफ़ बढ़ रहा है । और दुनिया भर के लोग अभी हिन्दी भाषा को जानने के लिए बहुत उत्सुक हो रहे हैं । और भारत सरकार के प्रयास भी इस दिशा में सराहनीय है । इस सम्मेलन के आयोजन में हमारे मन में श्रीलंका में हिन्दी का प्रचार–प्रसार और भी बढ़ाने के लिए प्रेरणा मिली। और वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी भाषा विश्व पटल पर एक सर्वमान्य भाषा के रूप में जाने जाएगी ।

जय हिन्दी ! जय भारत !